Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

विकसित भारत में पत्रकारिता का योगदान व महत्त्व

शोधार्थी

कुंवर मंगेश प्रहलाद

शोध निर्देशिका

डॉ. सुचिता उपाध्याय

महाराजा अगरसेन, हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखंड

इंद्र विद्यावाचस्पति के अनुसार, "पत्रकारिता पांचवां वेद है जिसके द्वारा हम ज्ञान विज्ञान संबंधी नवीनतम जानकारी प्राप्त कर अपने बंद मस्तिष्क को खोलते है"

भारत देश की चिंतन परंपराओं में सूचनाओं के आदान प्रदान के लिए सर्वप्रथम महर्षि नारद का नाम आता है। ओर इन्हीं के उपलक्ष्य में नारद जयंती भी मनाई जाती है। पत्रकारिता के आदि पुरुष के रूप में महर्षि नारद का नाम विख्यात है।

देश की आजादी के बाद से भारत में पत्रकारिता को लंबे समय से परिवर्तनकारी माना गया, जिसने सख्त अपने आप को साधन और देश की कहानियों को आकार देने में महत्वपूर्ण आवाज की भूमिका निभाई है। सार्थक पत्रकारिता के महत्त्व को देश के स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका से लेकरआज के समकालीन समाज पर इसके प्रभाव रहा है। पत्रकारिता ने भारत की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस बदलते वैश्विक परिदृश्य में पत्रकारिता किसी भी लोकतांत्रिक देश की रीढ की होती है, जो वहाँ के संविधान में निहित स्वतंत्र भाषण और अभिव्यक्ति की आजादी के सिद्धांत को कायम रखती है। एक स्वतंत्र पत्रकारिता न सिर्फ जनता को जनहित योजनाओं की जानकारी देती है बल्कि सरकार को जवाबदेह भी बनाती है। एक सशस्त्र पत्रकारिता के माध्यम से लोकतंत्र और उसकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को कायम रखा जा सकता है। पत्रकारिता के मूलभूत सिद्धांतों में सामाजिक न्याय और मानवाधिकार की वकालत भी होती है। समाज में पत्रकारिता के उद्देश्य में सांस्कृतिक विविधता और एकता को बढ़ावा देना भी होता है।

प्रस्तावना

महान पत्रकार व समाजशास्त्री हर्बर्ट ब्रोकर के अनुसार - "पत्रकारिता व माध्यम से यह साधा नए जिसके माध्यम से हमें अपनी मस्तिष्क में उस दुनिया के बारे में समझ सूचनाएं संकलित कर आते हैं जिससे हम स्वतः कभी नहीं जान सकते हैं"

जनसंचार व संवाद की महत्ता हर समय हर युग में रही है। मानव सभ्यता के क्रमिक विकास में जनसंचार का अत्याधिक महत्त्व रहा है। जनसंचार को सेवाभाव बनानकिसी लोकतांत्रिक देश में पत्रकारिता का मूलभूत उद्देश्य रहा है। जिसमें सामाजिक सरोकार तथा सार्वजनिक हित एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। जिससे इसकी सार्थकता बढ़ती है। एक सार्थक पत्रकारिता के माध्यम से। सामाजिक सरोकारों की व्यवस्था की दहलीज तक पहुंचाने और प्रशासन की जनहित नीतियों तथा योजनाओं को समाज के सबसे निचले तबके तक ले जाने का दायित्व पत्रकारिता का ही है। देश की आजादी के बाद पत्रकारिता का दायित्व और जिम्मेदारियां दोनों ही बदल गई। वर्ष 1947 से पहले। देश के सामने आजादी का एक महान उद्देश्य था। उस महान उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए सारी पत्रकारिता के एक सुर एक जैसे ही थे। जिसमे वहीं आजादी के बाद क्षेत्रीय और भाषायी विभिन्नताओ के सुर अलग अलग होने के बावजूद सभी में स्वाधीनता प्राप्ति का उद्देश्य था। औपनिवेशिक

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

काल से स्वतंत्र होने के बाद पत्रकारिता में एक। बड़ा बदलाव आया। और आज डिजिटल युग की पत्रकारिता एक क्रांतिकारी पत्रकारिता कम व्यावसायिक पत्रकारिता अधिक बन गई है। देश की आजादी के बाद भारतीय संविधान का निर्माण हुआ। और यहाँ के नागरिको को स्वतंत्र रूप से जीने व अपने अधिकारों को समझनेकी स्वतंत्रता मिली। इसके साथ ही यहाँ के नागरिक अपने विचारों को बोलने व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रताकी गारंटी भी संविधान में थी। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार मिलते ही पत्रकारिता ने स्वतंत्र रूप से पत्रकारिता के उद्देश्यों को समझा और उसका निर्वाह किया। आज हम कह सकते हैं कि यह एक प्रमुख कारण रहा जिसमें भारत में पत्रकारिता के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण क्रांति आई जिससे यहाँ पत्रकारिता के कई आयाम भी अस्तित्व में आये।

शब्द कुंजी। पत्रकारिता। संविधान, स्वतंत्रता। अभिव्यक्ति की आज़ादी, जनहित। सरकार रिपोर्ट।,, धर्म। समाज।

पत्रकारिता का ऐतिहासिक संदर्भ

देश में पत्रकारिता का एक समृद्धशाली इतिहास रहा है जो देश की स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा हुआ है। जिसमें विशेष रूप से स्वतंत्रता आंदोलन को बढ़ावा देने वाले अखबारों के शुरुआती दिनों से लेकर आज के आधुनिक मीडिया पर प्रदर्शित तक इस क्षेत्र में चुनौतियों के साथ साथ। अनेक सामाजिक। चुनौतियों। का सफर रहा है। आप निवेशक काल में। महान पत्रकार व साहित्यकार भारतेन्दु का योगदान अद्वितीय रहा है, जिन्होंने भारतीय नवजागरण के अग्रदूत बनकर हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का अनुकरण किया था। भारतीय इंदु ने अपने प्रकाशन में। कविवचनसुधा, 1867 अल्मोड़ा अखबार। दीप्ती प्रकाश। बिहार बंधु 1872 हिंदी प्रतिभा। उचित वक्ता 1880 ब्राह्मण। ये सभी पत्रकारिता के प्रमुख पत्र रहे हैं।ऐसा माना जाता है कि भले ही स्वतंत्रता संग्राम का आगाज विद्रोह से हुआ हो पर इसके बीच विभिन्न पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से 20 सदी के पूर्वार्ध में ही डाले गए थे। भारतीय समाज को जागृत करना व स्वतंत्रता के लिए प्रेरित करने में हिंदी पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिसमें गाँधीजी द्वारा प्रकाशित सत्याग्रह, यंग इंडिया, नवजीवन आदि पत्रों का प्रकाशन भी देश की जनता को जगाने व मानसिक तौर पर तैयार करने के लिए किया गया था।

विकसित भारत के परिदृश्य में मीडिया व लोकतंत्र

भारत के पूर्व उप राष्ट्रपति। के अनुसार- मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ मानावह मीडिया की भूमिका लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। लोकतंत्र के मंदिर संसद और मीडिया एक दूसरे के सहयोगी है। दोनों ने ही संस्था। जन भावनाओं को अभिव्यक्ति देते हैं। आज भारत बढ़ती और बदलती जन अपेक्षाओं के युग में प्रवेश कर रहा है। तब आवश्यक हो जाता है कि। मीडिया व लोकतंत्र पहले से स्थापित पूर्वाग्रहों को त्यागें वजन अपेक्षाओं को स्वीकार करें। विकसित भारतकी दिशा में मीडिया को एक विकास वादी, सकारात्मक राजनीति का वाहक बनाना चाहिए। एक स्वस्थ लोकतंत्र में मीडिया, सरकारों और राजनीतिक दलों के जवाबदेही ही अवश्य तय करें। परन्तु मीडिया के केंद्र में जनसरोकार हो न कि सत्ता संस्थान। भारत जैसे विविधताओँ से भरे देश में। किसी नए स्थान पर चुनाव होते रहते हैं जिससे लोकतंत्र का उत्सव कहा जाता है। वास्तव में चुनाव लोकतंत्र का पवित्र यज्ञ है। जिसमें चुनाव आयोग यह अपील करता है कि सभी मतदाता भाग ले। जिससे एक स्वस्थ लोकतांत्रिक व्यवस्था बनी रहे। इसी दौरान कुछ प्रमुख समाचार पत्रों की सुर्खियों में। पेड़ न्यूज़ फेक न्यूज़ व सोशल मीडिया का अनियंत्रित प्रयोग। ने भी सभी वर्गों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। इन विषयों पर मीडिया संस्थान को सम्मिलित रूप से। चिंता करनी चाहिए। और एक व्यावहारिक निदान। की ओर अग्रसर होना चाहिए।क्योंकि पत्रकारिता का मूल उद्देश्य होता है लोकतंत्र को स्वस्थ बनाना। जिसमें मीडिया का कर्तव्य होना चाहिए कि वे जन सरोकार जन भागीदारी को चुनाव का केंद्र में रखें। प्रमुख रूप से डिजिटल मीडिया में अक्सर ये देखा गया है कि जब चुनाव का अवसर आता है तो जातीय विश्लेषण किये जाते हैं जिससे समाज में जाति और सांप्रदायिक विभाजन और गहरे होते हैं। जो स्वस्थ राजनीति के उद्देश्यों का विफल कर रहे हैं।

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

भारत में पत्रकारिता का भविष्य

पत्रकारिता का अपना स्वयं एक धर्म होता है। आज के भारत में। अधिकांश लोगों का मन धर्म को लेकर खराब हो जाता है व उनकी स्थिति कुछ छुईमुई जैसे पौधे की हो जाती है। जबकि भारतीय परंपरा में धर्म की बात तथा ट सत्य सनातन की बात के लिए है। धारण के लिए। समाज में हर व्यक्ति, हर एक समूह का अपना एक धर्म होता है। इसको हम उनके कर्तव्य से ले सकते हैं। आज से करीब हजारों वर्ष पूर्व ऐसे ही धर्म की व्याख्या देखी गई थी जिसमें राम के अनुज लक्ष्मण को जब शक्ति लगती है तब उस सख्ती के निदान के लिए हनुमानजी स्वयं सुशील वैद्य के पास जाते हैंजिसमें वैद्य सुसैन अपने। चिकित्सा की शक्ति देने से मना करते हैं तब हनुमानजी उनको धर्म का ज्ञान कराते हैं और कहते हैं कि वैध का धर्म एक रोगी के लिए कहते हैं। वैध और रोगी के बीच एक। अदृश्य संबंध होता है। और इस संबंध का आधार विश्वास होता है। इसलिए वैध को यह कभी नहीं देखना चाहिए की रोगी का काल, देश, परिस्थिति क्या है और वह कौन है। किस स्कूल से है और किस वंश से है? रोगी केवल रोगी होता है। उसका कोई? द्वितीय परिचय नहीं होता। सर्वप्रथम रोगी के निरोग होने के उपरांत ही परिचय प्राप्त किया जा सकता है। ऐसे ही। कुछ धर्म आज भी प्रासंगिक है, जिसमें राजधर्म लोकधर्म। का उल्लेख है। विभिन्न चर्चाओं में प्राप्त होता है।

लोकतंत्र के चौथे स्तंभ में पत्रकारिता का क्या धर्म है? इस पर कई अख्यान व्याख्यान हुए हैं। पत्रकारिता के धर्म से ही इसका भविष्य टिका हुआ है। अगर आज के वर्तमान पत्रकारिता की बात की जाए तो इसकी स्थिति चिंतनीय भी है और उत्साहजनक भी है। पत्रकारिता का भी अपना एक राजधर्म होता है, जिसमें न किसी लिंग, जाति, धर्म। जन्मस्थान के समक्ष समता होती है। पत्रकार किसी भी विषय में किसी से कोई भेदभाव नहीं कर सकता है। उसके लिए गरीब और। जनभागीदार दारी भी बेहद जरूरी होती है।

डिजिटल समाचार रिपोर्ट 2023

यह रिपोर्ट प्रतिष्ठित राइटर्स इंस्टीट्यूट के द्वारा। प्रकाशित डिजिटल समाचार रिपोर्ट दोहा मेमैं दुनिया भर में ऑनलाइन समाचार उपयोग पर टल में महत्वपूर्ण बदलावों का खुलासा किया गया है। राइटर्स इंस्टिट्यूट ऑफ जर्नलिज़म, वाद विवाद, सहभागिता और अनुसंधान के माध्यम से दुनिया भर में पत्रकारिता के भविष्य की खोज के लिए समर्पित है और इसी उद्देश्य से कार्य कर रहा है। इसके प्रमुख बिंदु निम्नवत हैं।

- भारत जैसे देश में ऑनलाइन समाचार उपयोग के बदलते पैटर्न। और भारतीय पारंपरिक समाचार वेबसाइट से हटकर ऑनलाइन समाचार के अपने प्राथमिक स्रोत के रूप में तेजी से सर्च इंजन मोबाइल समाचार। उपभोक्ता इस ओर रुख कर रहे हैं।
- इस रिपोर्ट के माध्यम से। भारतीय समाचार प्रणाली के विषय में केवल 12% लोग प्रत्यक्ष स्रोत जैसे समाचार पत्रों से जबकि प्रतिशत समाचार पढ़ने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर रहा है।
- वैश्विक परिदृश्य में, एशिया, लैटिन अमेरिका और अफ्रीका के लोग समाचार के लिए सोशल मीडिया पर बहुत ज्यादा निर्भर है।

मीडिया एक व्यक्तिगत विषय है जिसमें विभिन्न देशों की विभिन्न प्राथमिकताएं हैं जैसे। संपन्न देश फिनलेंड और यूके में। 80% में लोगों में पढ़ना प्रमुख हैं। और भारत? जैसे विकासशील व थाईलैंड जैसे देशों से लोग। 40% से ज्यादा ऑनलाइन समाचार देखना पसंद करते हैं। छोटे देशों में फिलिपिंस में लगभग 52% लोग वीडियो समाचार के माध्यम से। जागरूक रहते हैं।

मीडिया पर विश्वास

भारत। जैसे लोकतांत्रिक देश में। समाचारों पर भरोसा। वर्ष। 2021 और 2023 के बीच। लगभग परसेंट के स्तर पर बना हुआ है। और वैश्विक परिदृश्य में फिनलैण्ड में 69%, पुर्तगाल में 58% जबकि लोकतंत्र का जनक संयुक्त राज्य अमेरिका के 32%, अर्जेंटीना में 30%, हंगरी में 25% और ग्रीस जैसे देशों में 19% के। कुछ इस तरह के राजनीतिक ध्रुवीकरण वाले देशों में विश्वास का स्तर कम है।

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

संपूर्ण विश्व को विथ जैसी महामारी से आगे अग्रसर हो रहा है तो कोव ने समाचार उद्योग पर भी अपने कुछ नकारात्मक परिणाम को दर्शाया है। जैसे भारत में समाचार पढ़ने और साझा करने दोनों में चिंताजनक गिरावट आयी है। आंकड़ों से पता चला है कि वर्ष। 2022 ऑर 20 ट्वेंटी थर्ड के बीच ऑनलाइन समाचार तक पहुँच में। 12%। की भारी गिरावट दर्ज की गई है। आज की इस डिजिटल क्रांति में टेलीविज़न का स्थान अहम है। ऐसे में टेलीविजन दर्शकों की संख्या में विशेषकर युवा और शहरी व्यक्तियों के बीच भी 10% की कमी दर्ज की गयी है।

जब भी कभी पत्रकारिता की बात होती है तो ऐसे में स्वतंत्रता उनके अनुपूरक में आती है। तो विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक 2023 हाल ही में रिपोर्टर्स विदाउट वाटर द्वारा प्रकाशित सूचकांक जारी किया गया। जिसमें कुल 180 देशों। और क्षेत्रों में पत्रकार व मीडिया आउटलेट की मीडिया, स्वतंत्रता की सीमा का आकलन व मूल्यांकन किया गया। रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर द्वारा प्रदर्शित सूचकांक प्रदेश देश में मीडिया बलवाद पारदर्शिता, लोकतांत्रिक ढांचे और पत्रकारों की सुरक्षा के मूल्यांकन स्तर पर आधारित है। जिसके प्रमुख बिंदु निम्नवत हैं।

- हालिया प्रकाशित रिपोर्ट 2023 के अनुसार। भारत की रैंकिंग 180 देशों में। वें स्थान पर है। यह निम्न रैंकिंग किसी भी लोकतांत्रिक देश में प्रेस की स्वतंत्रता से महत्वपूर्ण गिरावट का दर्शाती है। इस रिपोर्ट से यह ज्ञात हुआ कि भारत की रैंकिंग पिछले वर्ष की तुलना में 11 पायदान गिरकर 161 पोजिशन पर आए हैं।उल्लेखनीय है कि। यह रैंक स्थान पर थी पिछले वर्ष।
- रिपोर्ट के अनुसार,भारत के पड़ोसी देशों ने भारत से अच्छा प्रदर्शन किया है। जिसमें प्रमुख रूप से पाकिस्तान है,जिसकी रैंकिंग रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर में 150 भारत के प्रमुख प्रसंस् थानों ने जैसे भारतीय महिला प्रेस कॉर्प्स। प्रेस क्लब ऑफ इंडिया और प्रेस असोसिएशन ने सूचकांक में आयी गिरावट पर अपनी चिंता को व्यक्त किया है। व इन संगठनों ने भारत में प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक में बिगड़ती स् थिति और। शत्रुतापूर्ण कामकाजी परिस्थितियों के कारण प्रेस की स्वतंत्रता में आने वाली बाधाओं पर अपनी गहरी चिंता व्यक्त की है।

एक ओर जहाँ संपूर्ण विश्व। नई डिजिटल क्रांति के दौर में है। ऐसे में भारत में इंटरनेट रिपोर्ट 2022 के अनुसार अधिकांश भारतीय इंटरनेट उपयोगकर्ता बन गए हैं। ऑफिस भारत इंटरनेट रिपोर्ट 22 के। मायने डिजिटल मीडिया व सोशल मीडिया के लिए। व्यापक है। आज इस तरीके डिजिटल क्रांति का दौर है। उसमें सोशल मीडिया की अपनी महती भूमिका। सोशल मीडिया से समाचार तुरन्त एक जगह से दूसरी जगह न जाकर। बल्कि एक जनमत का भी रूप लेता है जिसमें जनता सीधे अपने विचार प्रस्तुत कर सकती है। भारत जैसे देश के लिए यह उल्लेखनीय है कि शहरी भारत में इंटरनेट प्रवेश स्तर केवल 6% थी जो अब 14% हो गई है। व 54% सक्रिय इंटरनेट उपयोगकर्ता पुरुष थे जो। 2022 के अंत में 57 हो गए हैं। वह यह एक अनुमान है कि वर्ष 2025 तक 65% नए उपयोगकर्ताओं में महिलाएं भी होंगी, जो लैंगिक अंतराल को पाटने में मदद करेंगी।

निष्कर्ष

पत्रकारिता लोकतंत्र का अभिन्न अंग है। पति पल परिवर्तित होने वाले जीवन और जगत का दर्शन समझना केवल पत्रकारिता द्वारा ही आज के समय में संभव है। परिस्थितियों के अध्ययन, चिंतन, मनन और आत्म अभिव्यक्ति की परख, दूसरों का कल्याण और लोक मंगल की भावना ने ही पत्रकारिता को जन्म दिया। समय ज्ञान का व्यवसाय ही पत्रकारिता की उपयोगिता व महत्त्व को परिलक्षित करते हैं। जिसमें जनता को सूचित करना, शिक्षित करना, लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को कायम रखना, सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों की। पुरज़ोर वकालत करना भी शामिल है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में। पत्रकारिता के महत्त्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। यह एक आठ सत्य है। कि लोकतंत्र को कायम। मैं पत्रकारिता की अपनी महती भूमिका है जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता। अपने चरमोत्कर्ष पर है। पत्रकारिता की खोजी भूमिका और जानकारीपूर्ण। साधन के माध्यम से पत्रकारिता नागरिको को सशक्त बनाती है, सामाजिक न्याय को बढ़ावा देती है और सरकार को जवाबदेह भी बनाती है। आज बदलते भारत? व विकसित भारत मीडिया पर आदर्श। मैं पत्रकारिता के नए आयाम

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

स्थापित हो रहे हैं, जिसमें नैतिक पत्रकारिता के सिद्धांतों का समर्थन करना भी आवश्यक है और उन्हें बनाए रखना महत्वपूर्ण है। पत्रकारिता। को सुनिश्चित करना है कि यह आवश्यक संस्थान आगे बढ़ता रहे। जिसके मूलभूत। सिद्धांत में ईमानदारी और समर्पण के साथ राष्ट्र की सेवा ही सर्वोपरि रहे।मीडिया व लोकतंत्र के बदलते पर देश में मीडिया ने अपनी। सामाजिक भूमिका के माध्यम से जनमानस में राष्ट्रप्रेम की भावना के विकास में योगदान दिया है व। लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण। को बढ़ावा देने में अपनी उपयोगिता दिखाई है। आज के दौर में, सवस्थ मनोरंजन की सामग्री भी हमें डिजिटल मीडिया के माध्यम से प्राप्त हो रही है वह। प्रमुख महत्वपूर्ण धार्मिक, सांस्कृतिक पक्षों का विभिन्न पहलुओं का निष्पक्ष विवेचना भी आज की पत्रकारिता में हो रही है। सरकार की विभिन्न जन कल्याण की नीतियों की भी विवेचना व प्रसारण मीडिया द्वारा किया जा रहा है। भारत जैसे विविध सांस्कृतिक देशों से सर्व धर्म समभाव की भावना को पुष्ट किया जा रहा है। और इस शोध पत्र के अंत में पत्रकारिता के लिए प्रथम और अंतिम उद्देश्य राष्ट्र प्रथम और राष्ट्र अंतिम ही है।

संदर्भ सूची

- Baldev, Raj. Gupta. Mass communication and development. University publication Chowk Varanasi. 87107.
- Nora Singh Kubal. What do Women by Development International review? 1973. Page 25.
- Dennis, Michael. Mass Communication Theory Says Publication, London Page. 2223.
- SL Sharma. Changing Conception of Development in General of National Development, Volume 1M, Summer 198, P7.
- www.jankriti.com / jan 28 2022
- www.bbc.com / 8 dec 2009
- www.yugwarta.com 21 sep 2023
- Report Reporters without Borders., 20, 23